भारतीय सामाजिक परिप्रेक्ष्य में नारी

सम्पादक

प्रो. निर्मला एस. मौर्य

डॉ. जाह्नवी श्रीवास्तव

यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन

दिल्ली-110002

मधुमक्खी पालन व्यवसाय: अवसर और चुनौतियाँ

–डॉ. अंकिता राज*, डॉ. रश्मी सिंह**

मधुमक्खियों से शहद उत्पादन और आर्थिक सशक्तिकरण संभव है। पिछले 12 वर्ष में, शहद उत्पादन में 200% की वृद्धि हुई है। 2005-2006 वर्ष में शहद उत्पादन 35000 मीट्रिक टन था और 8 लाख मधुमक्खी-कॉलोनियां थीं, वहीं 12 साल बाद 2017-2018 में शहद उत्पादन 1.05 लाख मीट्रिक टन हो गया और मधुमक्खी-कॉलोनियों की संख्या बढ़कर 35 लाख हो गयी। मधुमक्खी-पालकों की संख्या में भी बढ़ोतरी हुई हैं। खादी और ग्रामोद्योग आयोग ने 2017 में 'हनीमिशन' की शुरुआत की एवं पिछले दो साल से भी कम समय में देश के किसानों एवं बेरोजगार युवकों को मधुमक्खी पालने के लिए एक लाख से अधिक बक्से दिये हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय हनी मिशन की शुरुआत करते वक्त श्वेतक्रांति (दूध से सम्बन्धित) के समान 'स्वीटक्रांति' की जरूरत को समझाया था। इसके साथ ही बताया था कि कैसे स्वीटक्रांति कम पैसे में युवाओं के लिए ज्यादा मुनाफे का सौदा साबित हो सकती है। इसे मीठी क्रांति (Sweet Revolution)का नाम दिया। प्रोजेक्ट-हब राष्ट्रीय शहद मिशन के तहत एक उप-मिशन है। जोकि हाथियों के हमले को रोकने के लिए मधुमक्खी के बक्से को बाण के रूप में उपयोग करता है।

---

* संस्थापक, ग्रीन हेल्थ प्रोडक्टस

** असिस्टेंट प्रोफेसर, जूलॉजी विभाग, डी.वी.सी. उरई, जालौन, उप्र